OM 6 final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:05 AM Page 9

कैनेडा-टोरोन्टो। प्रसिद्ध कुश्तीबाज टाइगर जीत सिंह, उनकी धर्मपत्नी सुखजीत कौर व ब्र.कु. साधना,दिल्ली समूह चित्र में।

कूचबेहर-प.बंगाल। भुटान राजा के सेक्रेट्रीएट ताशीजी को शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. संपा। साथ हैं ब्र.कु. भानू,माउण्ट आबू।

दिल्ली-रोहिणी। डी.टी.सी बस स्टाफ के लिए डीपो में आयोजित 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. लक्ष्मी, डी.टी.सी.स्टाफ तथा अन्य।

रुड़की। ब्र.कु. विमला को महिला दिवस पर याना सोसायटी की ओर से सम्मानित करते हुए प्रदीप बत्रा।

हाथरस-आनंदपुरी(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव समारोह में दीप प्रज्वलन करते हुए कोषाधिकारी प्रदीप भार्गव, कर्नल धर्मबीर सिंह, दिनेश सेक्सरिया, राजेश दिवाकर, कैप्टन ब्र.कु. अहसान सिंह, ब्र.कु. सरोज।

अलकापुरी-वड़ौदा। 'स्ट्रेस मैनेजमेंट शिविर' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. डॉ. निरंजना, कुमकुम लाल, ब्र.कु. नरेन्द्र पटेल, ब्र.कु. डॉ.अनिल व सीनियर इंजीनियर बाबुभाई भुरीया।

दिलशिकस्त, अवसाद जैसी मनोदशा का समाधान गीता में

कुछ लोगों का यह मानना है कि श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान कोई हिंसक युद्ध के मैदान में नहीं दिया गया था। परमात्मा ने कोई हिंसक युद्ध की प्रेरणा नहीं दी थी, यह तो एक मनोयुद्ध की कहानी है। जीवन में जिस प्रकार के संघर्ष से मनुष्यात्मा गुज़रती है उन संघर्षों का समाधान वो कैसे कर सकता है? यह इस ज्ञान से स्पष्ट हो जाता है। इस प्रकार से कोई उसको हिंसक युद्ध के रूप में दर्शाते हैं, तो कोई उसको अहिंसक युद्ध के रूप में दर्शाते हैं। इन गुह्य रहस्यों को समझना कभी-कभी मनुष्य के वश की बात नहीं हो पाती है। इस ज्ञान को सभी ने अपने-अपने दृष्टिकोण से देखना और समझना चाहा। हर एक ने अपने बौद्धिक स्तर से उसका अनुवाद किया। श्रीमद्भगवद्गीता इसलिए श्रेष्ठ है कि परमात्मा ने एक ही पवित्र पुस्तक में जीवन में आने वाली सभी समस्याओं का समाधान दिया है। इसमें व्यक्तिगत स्तर के समाधान भी प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार की चुनौतियों से मनुष्य गुज़रता है, जब वो दिलशिकस्त हो जाता है, नर्वस हो जाता है, डिप्रेशन में चला जाता है तो ऐसी मनोदशा का समाधान भी इसमें प्राप्त होता है। दूसरा, जैसे दिखाते हैं कि कौरव और पांडव एक ही परिवार के सदस्य थे। पारिवारिक स्थिति के अंदर जिस प्रकार की समस्या उनके सामने आई तो इस प्रकार की परिवारिक स्थिति की समस्या का समाधान भी इसमें प्राप्त होता है। इतना ही नहीं लेकिन उस समय जो समाज की स्थिति थी, वैसी ही स्थिति आज के समाज में भी देखने को मिलती है। श्रीमद्भगवद्गीता में सामाजिक स्थिति का समाधान भी प्राप्त होता है तो एक राष्ट्रीय स्थिति का समाधान भी इस पवित्र पुस्तक में प्राप्त होता है। सारी वैश्विक स्थिति का समाधान भी इस पवित्र पुस्तक में दिया गया है। इसका भावार्थ यह है कि इसमें एक मनुष्य की मनोदशा से लेकर के वैश्विक स्थिति तक की समस्याओं का समाधान इस पवित्र पुस्तक में भगवान द्वारा दिया गया है, इसलिए यह पुस्तक विशेष है। आज की दुनिया में कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में एक ऐसे चुनौतीपूर्ण दौर से गुज़रना पड़ता है, जब जीवन जीना मनुष्य को कठिन लगने लगता है। उसके पास कुछ भी नहीं बचता, उसका विश्वास, उसके मूल्य, उसका धैर्य, दया सबकी हदें टूटने लगती हैं, तब कुछ लोग तो इन चुनौतियों को पार करके जीवन को सफल कर लेते हैं परंतु कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो उस संघर्ष में ही अपना जीवन नष्ट कर देते हैं, क्योंकि सही विधि उनके पास नहीं होती है। जिस तरह का परिवर्तन समय चाहता है, उस चुनौति-पूर्ण दौर से गुज़रने के लिए व परिवर्तन अपनाने की क्षमता उनके पास नहीं थी। जब उनकी आंतरिक हदें टूट जाती हैं और वे अपने आपको असमर्थ महसूस करने लगते हैं, अपने को शक्तिहीन समझने लगते हैं तब ऐसे समय में भगवान, जिसको बुद्धिवानों की बुद्धि कहा गया है, वे आ करके हमें एक सर्वोत्तम बुद्धि प्रदान करते हैं, एक ऐसी विवेक शक्ति प्रदान करते हैं जिससे कैसी भी समस्या का हल प्राप्त करने के लिए एक विवेक शक्ति हमारे अंदर जागृत हो जाती है और उसी के आधार से हम उसको पार कर सकते हैं।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

अनुभव

देवी गायत्री की भक्त खुद भगवती बन गई

देवी गायत्री की भक्त ब्र.कु. भगवती,कामरेज-सूरत, जिनका नित्यकर्म पूजा करना और उसके पश्चात् ही अन्न जल ग्रहण करना था। परन्तु उन्हें फिर भी कटु व्यवहार तथा निराशा आदि संस्कारों ने घेर रखा था। उनकी खुद की दादी के कथनानुसार कि तुम्हीं तो गायत्री हो, परन्तु ये बातें उन्हें एक कल्पना सी लगती थीं क्योंकि ऐसा कुछ भी उनके आचार-विचार में नहीं था। परन्तु आज वो इस ईश्वरीय ज्ञान को लेकर खुशी व उमंग-उत्साह से लवरेज हैं। आज हम उन्हीं की कुछ बातें, उन्हीं के कुछ भाव आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं –

ईश्वरीय ज्ञान के बारे में मुझे बचपन से ही थोड़ी-बहुत जानकारी थी लेकिन ज्ञान क्लीयर नहीं था कि शिव बाबा इस धरती पर आकर, ब्रह्मा बाबा के तन में आकर, आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर हमें मनुष्य से देवता बनाते हैं, क्योंकि यह ज्ञान दादी हृदयमोहिनी के माध्यम से मिलता है। हमारी दादी माँ ज्ञान में चलती थीं, हम भक्ति करते थे, उपवास करते थे । वह कहती थीं कि उपवास करना है तो भगवान के पास यानि ऊपर वास करो। जब मैं गायत्री मंदिर जाती थी तो दादी माँ कहती थीं कि आप स्वयं गायत्री हो, मंदिर जाने की क्या दरकार है, लेकिन अंदर से मुझे फीलिंग आती थी कि हम कैसे गायत्री हो सकते हैं। बाबा का ज्ञान मिलने से पहले मेरा जीवन थोड़ा नीरस था। लेकिन बाबा का बनने के बाद मैंने ऐसी उदासी कभी महसूस नहीं की। परिस्थितियाँ तो बहुत आईं हैं लेकिन उस परिस्थिति में पार होने के लिए बाबा ने मुझे हर समय मदद की और जीवन में गुस्सा करना, लड़ाई-झगड़ा करना, ये सब संस्कार पहले से ही मेरे में नहीं था। किसी को सच बोल देती थी लेकिन ऐसे बड़ा झगड़ा करना, उससे रूठ जाना, थोड़े समय के लिए भले रूठ जाऊँ लेकिन शाम होते-होते तो मुझे ऐसे रहा नहीं जाता था, तो मैं बोलने लग जाती थी। इस ज्ञान में आने के बाद भी मेरे जीवन में बहुत से परिवर्तन हुए। पाण्डव भवन में भी मैं बाबा से मिलने के लिए आई हूँ। ज्ञान में आए हुए हमें 26 साल हो चुके हैं। उस समय हमारे छोटे-छोटे बच्चे थे, हम तभी इस ज्ञान मार्ग पर चल पड़े थे। तो बाबा का ज्ञान मिलने के बाद मेरा ये नियम था कि कुछ भी हो जाए मुझे रोज़ सुबह मुरली क्लास ज़रूर करना है। मैं अपने बच्चों को घर में ताला लगाकर रखकर चली जाती थी। मेरा कभी सुबह का क्लास मिस न हो, यही मेरा दृढ़ संकल्प था। लेकिन थोड़ी चिंता भी हो जाया करती थी पर जैसे बाबा कहते हैं कि सब बाबा को सौंप दो। तो एक दिन मैंने बाबा को बोला कि यदि आपको मुझसे सुबह का क्लास कराना है ना तो बच्चों को सम्भालने की ज़िम्मेवारी आपकी। मैं कुछ नहीं जानती, मैं तो ताला लगाकर सेंटर पर आ जाऊँगी। हमारा सेंटर चार किलोमीटर दूर था, पैदल चलकर जाते थे। मेरे युगल भी ज्ञान में चलते हैं। जब यहाँ राजयोग तपस्या में आने का संकल्प था तब से मुझे अंदर से ये खुशी थी कि पाण्डव भवन में तो बहुत समय से नहीं रहे हैं लेकिन भट्ठी का चांस मिला है जाना चाहिए। मैं बाबा को कहती थी कि मुझे और कुछ अनुभव नहीं करना है, मुझे सिर्फ सूक्ष्म वतन का अनुभव करना है। मैं अमृतवेले साढ़े तीन बजे योग के लिए बैठी थी तो सच में मुझे इतना अच्छा सूक्ष्म वतन का अनुभव हुआ कि सफेद प्रकाश की दुनिया, बस बाबा और मैं हूँ, इसका वर्णन नहीं हो सकता। चार से पाँच बजे तक हिस्ट्री हॉल में हमारा योग था। टीना बहन ने बताया था कि ये हिस्ट्री हॉल ब्रह्माबाबा की कर्मभूमि है। बाबा यहाँ बच्चों से मिलते थे, टोली खिलाते थे। उनके पार्थिव देह को भी यहाँ रखा था। तो मैंने यही सोच रखा था कि बाबा कुछ भी हो जाए मुझे तेरे साथ का अनुभव करना है। तो हम पौने घंटे वहाँ बैठे, बहन कॉमेन्ट्री करा रही थीं। मैंने ऐसा अनुभव किया कि मैं यहाँ हूँ और बाबा वतन में मुझे बाहें पसार कर बुला रहे हैं तो मुझे लगा कि मैं सच में वतन में चली गई और बाबा ने साकार में आकर मुझे अपनी बाहों में समा लिया और कहा कि आओ बच्ची, चिन्ता मत करो, और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे कि मैं धन्य हो गई।